अपमान ने साकार किया संविधान शिल्पी को

एक बालक को बहुत प्यास लगी थी लेकिन उसे कुआँ छूने की भी अनुमति नहीं थी क्योंकि वह महर साँचे का था। बालक प्यास को सह नहीं पाया और कुएँ में जाकर पानी पी लिया। किसी ने उसे देख लिया और चिल्लाकर लोगों को इकट्ठा कर लिया। सभी ने मिलकर निर्दयता से बालक को मारा। एक दिन जब वही बालक स्कूल जा रहा था, बरसात आनी शुरू हो गई। बचने के लिए उसने एक दीवार का सहारा ले लिया। घर के मालिक ने अंदर से यह दृश्य देख लिया कि एक महर बालक उसके घर को छू रहा है। वह तुरंत बाहर आया और बालक को ज़ोर से धक्का देकर पानी में गिरा दिया, उसकी सभी किताबें भी पानी में गिर गईं।

एक बार, यही बालक और उसका भाई अपने पिता से मिलने एक बैलगाड़ी में जा रहे थे। जब गाड़ी के मालिक को उनके कुल का पता चला तो उसने क्रोधित होकर बच्चों को गाड़ी से बीच रास्ते पर गिरा दिया।

अमानवीयता और अपमान की इन तीनों घटनाओं ने उस मासूम बालक के मृदु मन पर क्या प्रभाव डाला होगा? अपमान और तिरस्कार ने दुखी बनाने के बजाय बालक के मन में यह दृढ़ता पैदा की कि अस्पृश्यता के क्रूर पंजे से भारत को मुक्त करना ही है। संकल्प को साकार में लाकर मानव से ही, मानव पर होने वाले अत्याचारों को निर्मूल करने वाले, वे थे स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर।

मोहग्रस्त को बनाया महाकवि

रामबोला नामक एक व्यक्ति को अपनी पत्नी रत्नावली से अत्यंत मोह था। मोह इतना ज़्यादा था कि जब रत्नावली मायके गई तो रामबोला वियोग सह न पाया और बिगर निमंत्रण, मध्यरात्रि होते हुए भी ससुराल पहुँच गया। रत्नावली को पति की यह अति आसक्ति अच्छी नहीं लगी। क्रोध और नफरत से तप्त होकर उसने कहा, 'आपको लज्जा नहीं आई जो दौड़ते हुए आ गए, यदि इससे आधा मोह भी भगवान के चरणों के प्रति होता तो इस संसार के भय से आप मुक्त हो जाते।'

यह तीव्र अपमानकारी बोल रामबोला के हृदय को छू गया, वह स्तब्ध रह गया। इसी अपमान द्वारा एक महाकवि का उदय हुआ। इसी क्षण मोहग्रस्त रामबोला की मृत्यु हो गई और सुप्रसिद्ध संत कवि तुलसीदास जी प्रकट हो गए जिन्होंने रामचरित मानस जैसे अमर ग्रंथ की रचना की।

अब कहिए, अपमानित होना बुरी चीज़ है? अगर इन व्यक्तियों के जीवन में ये घटनायें नहीं घटतीं तो शायद इतिहास का शोकेस इन अमूल्य रत्नों से नहीं शृंगारा जाता। ऐसे सैकड़ों उदाहरण हमें इतिहास में मिलते हैं जो अपमान सहकर महान बन गए।

सृष्टि के आदि-मध्य और अंत का राज़ समझकर, इस सृष्टि नाटक में अपना अभिनय श्रेष्ठ बनाने के लिए पुरुषार्थ करने वाले आध्यात्मिक साधकों के जीवन में भी कई बार ऐसी घटनायें घटती हैं। **ऐसे संदर्भों में कभी-कभी ज्ञान की धारणा की गहराई की कमी के कारण, सहनशक्ति या समाने की शक्ति नष्ट हो जाने के कारण हम परेशानी और खिन्नता का अनुभव करते हैं तथा किनारा करने या उस स्थान को त्याग देने का निर्णय ले लेते हैं। मन में एक ग़लतफहमी बैठ जाती है कि अमुक व्यक्ति का कटु स्वभाव ही दुख व अशांति का कारण है तथा पुरुषार्थ में आगे न बढ़ने देने का मुख्य बाधक है। फिर हम भगवान से प्रार्थना करने लगते हैं, 'बाबा, यह मेरा अपमान करता रहता है, इसके कड़वे व्यवहार से मैं दुखी हूँ और पुरुषार्थ नहीं कर पा रहा हूँ। आप इसको मेरे से दूर कर दो तो मैं अच्छी रीति पुरुषार्थ कर आपका नाम बाला करूँगा।'**

यज्ञ इतिहास पर नज़र डालिए

लेकिन हमारी यह फ़रियाद इस यज्ञ के इतिहास को भी मंजूर नहीं है। वह हमें याद दिलाता है कि प्रजापिता ब्रह्मा, जिन पर सिर्फ एक-दो ने नहीं